

जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रभाव

डॉ. राम सिंह धुर्वे

सहायक प्राध्यापक भूगोल

शासकीय स्नातक महाविद्यालय नैनपुर, जिला-मण्डला (म.प्र.) भारत

सारांश :- जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय की एक गंभीर वैश्विक समस्या है, जो केवल प्राकृतिक पर्यावरण तक सीमित न रहकर मानव स्वास्थ्य के विविध पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। वैश्विक तापमान में निरंतर वृद्धि, वर्षा के स्वरूप में अस्थिरता, बाढ़, सूखा, हीटवेव तथा चक्रवाती तूफानों जैसी मौसमी घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि देखी जा रही है। इन परिवर्तनों का सीधा प्रभाव मानव जीवन, आजीविका और स्वास्थ्य पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण संक्रामक रोगों के प्रसार में वृद्धि हो रही है। ये संक्रामक रोग जो जलवायु पर निर्भर हैं अब नए भौगोलिक क्षेत्रों में फैल रहे हैं। वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के कारण बच्चों व बुजुर्गों में श्वसन तंत्र से जुड़ी बीमारियाँ, हृदय रोग तथा हीट स्ट्रोक जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। प्रदूषित जल जनित रोग जैसे डायरिया, हैजा तथा टाइफाइड आदि बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव से खाद्य असुरक्षा और कुपोषण की समस्या गहरी है, जिसका सीधा असर शारीरिक और मानसिक विकास पर पड़ता है। प्राकृतिक आपदाओं के बाद मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ—जैसे तनाव, अवसाद और चिंता भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभर रही हैं। यह स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के बीच घनिष्ठ संबंध है, इसलिए प्रभावी शमन और अनुकूलन नीतियों के माध्यम से जनस्वास्थ्य की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। इस शोध पत्र में जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य की बीच संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत है, जिसमें वैश्विक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसके प्रभाव, चुनौतियाँ और समाधान पर चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द :- जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस, पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिकी, वैश्विक तापन, डिहाइड्रेशन।

भूमिका :-

पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में दीर्घकालिक और स्थायी परिवर्तन जलवायु परिवर्तन है। यह तापमान में वृद्धि, वर्षा प्रतिरूप, समुद्र जल स्तर, मौसमी घटनाओं और पारिस्थितिकी तंत्र में होने वाले बदलावों से भी संबंधित है। प्राकृतिक कारणों से जलवायु में परिवर्तन हजारों वर्षों से होता रहा है लेकिन वर्तमान समय में इसका मुख्य कारण मानव गतिविधियाँ हैं जिसके उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। वनों की कटाई से कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ता है तथा जैव विविधता भी घटती है। ग्रीनहाउस गैसों के अत्याधिक उत्सर्जन से वैश्विक तापन की समस्या उत्पन्न होती है। वैश्विक तापन के परिणामस्वरूप हिमनदों का पिघलना, समुद्र स्तर में वृद्धि, हीट वेव, सूखा, अत्याधिक वर्षा जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। यह सब पर्यावरणस व मानव स्वास्थ्य और जीवन शैली को भी प्रभावित कर रहा है। उद्योगों से निकलने वाला धुँआ और अपशिष्ट जलवायु असंतुलन को बढ़ाते हैं। धान की खेती और पशुधन से मीथेन उत्सर्जन होता है। ज्वालामुखी विस्फोट, सौर विकिरण और महासागरीय धाराओं में परिवर्तन भी सीमित स्तर पर जलवायु को प्रभावित करती है। शीतलन उपकरणों व औद्योगिक उपयोग से फ्लोरोकार्बन निकलता है जो जलवायु को प्रभावित करती है। जलवायु परिवर्तन मानव और प्राकृतिक गतिविधियों का संयुक्त परिणाम है लेकिन वर्तमान संकट का मुख्य कारण मानवीय हस्तक्षेप है।

मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। स्वस्थ पर्यावरण मानव जीवन के लिए आधार प्रदान करता है जबकि

प्रदूषित और असंतुलित पर्यावरण स्वास्थ्य संकट को जन्म देता है। वायु जल, मिट्टी, जलवायु और पारिस्थितिक तंत्र सभी तत्व प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। स्वच्छ वायु श्वसन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। वायु प्रदूषण से अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, हृदय रोग और फेफड़ों का कैंसर जैसी बीमारियाँ बढ़ती हैं। स्वच्छ पेयजल और उचित स्वच्छता जलजनित रोगों जैसे हैजा, डायरिया, टाइफाइड आदि को रोकने में सहायक है। कृषि उत्पादन और जैव विविधता सीधे भोजन की गुणवत्ता व पोषण को प्रभावित करते हैं। तापमान में वृद्धि, हीट वेव, बाढ़ और सूखा जैसी घटनाएँ मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। पर्यावरण आपदाएँ जैसे चक्रवात या भूकंप अवसाद, चिंता और तनाव बढ़ाते हैं। अतः पर्यावरण की गुणवत्ता जितनी अच्छी होगी मानव स्वास्थ्य उतना ही सुरक्षित रहेगा। इसीलिए सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिकी और मानव स्वास्थ्य व आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

शोध का उद्देश्य एवं प्रासंगिकता :-

इस शोध का मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य के बीच गहरे संबंधों को समझना है। जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय या भौगोलिक समस्या नहीं है यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन और स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इस अध्ययन के उद्देश्य हैं—

1. जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न प्रत्यक्ष स्वास्थ्य समस्याओं का विश्लेषण।
2. अप्रत्यक्ष प्रभावों (संक्रामक रोगों का प्रसार, पोषण संकट, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ) को पहचानना।
3. भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य पर इसके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन।
4. स्वास्थ्य क्षेत्र में जलवायु अनुकूलन और नीतिगत सुधार की संभावनाओं को प्रस्तुत करना।

जलवायु परिवर्तन का सीधा प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। जैसे-गर्मी से मौतों में वृद्धि, नए-नए संक्रामक रोगों का प्रसार, कुपोषण और मानसिक बीमारियाँ। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2030 से 2050 के बीच जलवायु परिवर्तन के कारण प्रति वर्ष लगभग 250000 अतिरिक्त मौतें हो सकती हैं। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ स्वास्थ्य सेवाएँ और संसाधन सीमित हैं यह खतरा और भी गंभीर है। इस शोध की प्रासंगिकता इसीलिए है क्योंकि यह नीति-निर्माताओं, स्वास्थ्य विशेषज्ञों और समाज को यह समझने में मदद करेगा कि जलवायु परिवर्तन को केवल पर्यावरणीय संकट न मानकर एक स्वास्थ्य आपातकाल के रूप में देखा जाए और उसके समाधान हेतु त्वरित कदम उठाया जाये।

शोध संकल्पनाएँ :-

शोध संकल्पना वह अस्थायी कथन है जिसे शोध के माध्यम से परखा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध संकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं—

अ. मुख्य शोध संकल्पनाएँ—

- वैकल्पिक संकल्पना— जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- शून्य संकल्पना— जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर कोई महत्वपूर्ण और प्रभाव नहीं पड़ता है।

ब. विशिष्ट शोध संकल्पनाएँ—

- तापमान में वृद्धि से तापजनित रोगों (हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन) की घटनाएँ बढ़ती हैं।
- जलवायु परिवर्तन के कारण संक्रामक रोगों का भौगोलिक विस्तार बढ़ जाता है।
- अत्यधिक वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी चरम जलवायु घटनाएँ कुपोषण और जलजनित रोगों को बढ़ावा देती हैं।
- वायु प्रदूषण और बदलती जलवायु श्वसन एवं हृदय संबंधी रोगों की तीव्रता बढ़ाती है।
- जलवायु परिवर्तन मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
- बच्चे एवं वृद्ध वर्ग के लोग जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक प्रभावित होते हैं।

उपरोक्त शोध संकल्पनाएँ जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के मध्य कारण-परिणाम संबंध को स्पष्ट करने में सहायक होंगी। आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर इन संकल्पनाओं को स्वीकार या अस्वीकार किया जाएगा।

मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण :-

मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। स्वस्थ पर्यावरण मानव जीवन के लिए आधार प्रदान करता है और प्रदूषित और असंतुलित पर्यावरण स्वास्थ्य संकट को जन्म देता है। वायु, जल, मिट्टी और पारिस्थितिकी तंत्र, सभी तत्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

वायु गुणवत्ता— स्वच्छ वायु श्वसन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। वायु प्रदूषण से अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, हृदय रोग और फेफड़ों का कैंसर जैसी बीमारियाँ बढ़ती हैं।

जल और स्वच्छता— स्वच्छ पेयजल और उचित स्वच्छता जलजनित रोगों जैसे हैजा, डायरिया, टाइफाइड आदि को रोकने में सहायक है।

खाद्य और पोषण — कृषि उत्पादन और जैव विविधता सीधे भोजन की गुणवत्ता व पोषण को प्रभावित करते हैं।

जलवायु और मौसम — तापमान वृद्धि, हीट वेव, बाढ़ और सूखा जैसी घटनाएँ मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य — पर्यावरणीय आपदाएँ जैसे चक्रवात या भूकंप आदि अवसाद, चिंता और तनाव को बढ़ाते हैं।

स्पष्ट है कि पर्यावरण की गुणवत्ता जितनी अच्छी होगी, मानव स्वास्थ्य उतना ही सुरक्षित रहेगा। इसीलिए सतत् विकास और पर्यावरण संरक्षण केवल पारिस्थितिकी के लिए ही नहीं, यह मानवीय स्वास्थ्य और आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है।

जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव :-

जलवायु परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रभाव वे हैं जो तुरंत और सीधे तौर पर मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं।

1. हीट वेव और तापमान वृद्धि— पिछले कुछ दशकों से विश्वभर में औसत तापमान में तेजी से वृद्धि हुई है। भारत में भी हीटवेव-लू एक बड़ी चुनौती बन गयी है। अधिक तापमान से हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन, हीट क्रैम्स और थकान जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। लगातार बढ़ते तापमान से हृदय और गुर्दे की कार्यप्रणाली पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. अत्यधिक वर्षा और बाढ़— जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा के प्रतिरूप में असमानता बढ़ रही है। कहीं अत्यधिक वर्षा तो कहीं सूखा पड़ता है। बाढ़ और जलभराव से डूबने की घटनाएँ होती हैं। गंदे पानी के संपर्क में आने से जलजनित रोग जैसे हैजा, डायरिया, टाइफाइड आदि होते हैं। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में स्वच्छ पानी और भोजन की कमी से कुपोषण और संक्रमण की संभावना बढ़ती है।
3. तूफान और चक्रवात— चक्रवात और समुद्री तूफान सीधे तौर पर जीवन और स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग घायल हो जाते हैं और कई मौत भी हो जाती हैं। आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएँ टप हो जाती हैं जिससे रोगियों को उपचार नहीं मिल पाता है। विस्थापन और शरणार्थी शिविरों में रहने से संक्रमण और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ती हैं।
4. सूखा और जल संकट— सूखा सीधे तौर पर पीने के पानी और खाद्य उत्पादन को प्रभावित करता है। लंबे समय तक शरीर में पानी की कमी से डिहाइड्रेशन और गुर्दे की बीमारियाँ बढ़ती हैं। फसल उत्पादन में गिरावट से खाद्य असुरक्षा और कुपोषण की समस्या गंभीर हो जाती है।
5. जंगल की आग— जलवायु परिवर्तन से जंगलों में आग लगने की घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। इससे बड़ी मात्रा में धुआँ और वायु प्रदूषण फैलता है जो अस्थमा और अन्य श्वसन रोगों को बढ़ावा देता है।

जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य पर अप्रत्यक्ष प्रभाव :-

मानव स्वास्थ्य पर जलवायु के अप्रत्यक्ष प्रभाव दीर्घकालिक होते होते हैं और धीरे-धीरे मानव स्वास्थ्य पर गंभीर असर डालते हैं।

1. संक्रामक रोगों का प्रसार— जलवायु परिवर्तन से तापमान और आर्द्रता में बदलाव होता है जिससे मच्छर, मक्खी और अन्य वाहक जीवों का जीवन चक्र बदलता है। बढ़ते तापमान और जलभराव से मच्छरों की संख्या तेजी से बढ़ती है। जलजनित रोग जैसे हैजा, डायरिया और टाइफाइड भी बाढ़ और दूषित पानी से फैलते हैं।
2. खाद्य सुरक्षा और पोषण संकट— जलवायु परिवर्तन का सीधा असर कृषि पर पड़ता है। सूखा, अनियमित वर्षा और बाढ़ फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं। खाद्य असुरक्षा के कारण कुपोषण और एनीमिया जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं।
3. वायु प्रदूषण और श्वसन रोग— जलवायु परिवर्तन से वायु गुणवत्ता लगातार खराब हो रही है। आज्ञान परत में कमी और बढ़ते प्रदूषण से अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों के कैंसर जैसी बीमारियाँ बढ़ रही हैं। शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण के कारण हृदय और श्वसन रोगों का खतरा बहुत अधिक है।
4. जल संकट और स्वास्थ्य समस्याएँ— जलवायु परिवर्तन के कारण कई क्षेत्रों में जल संसाधन घटते जा रहे हैं। स्वच्छ पेयजल की कमी से डिहाइड्रेशन और गुर्दे की बीमारियाँ बढ़ती हैं। दूषित जल के उपयोग से आंत संबंधी रोग फैलते हैं।
5. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव— अत्यधिक जलवायु घटनाएँ केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती हैं। बाढ़, चक्रवात या सूखे से विस्थापित लोग तनाव, अवसाद और PTST (Post- Traumatic Stress

Disorder) का शिकार होते हैं। आर्थिक असुरक्षा और आजीविका संकट भी मानसिक रोगों को बढ़ावा देते हैं।

6. सामाजिक-आर्थिक असमानता- जलवायु परिवर्तन के अप्रत्यक्ष प्रभाव गरीब, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों पर अधिक गहरे पड़ते हैं। सीमित संसाधनों और कमजोर स्वास्थ्य सेवाओं वाले क्षेत्रों में बीमारियाँ तेजी से फैलती हैं। स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच न होने से मृत्यु दर बढ़ जाती है।

जलवायु परिवर्तन के अप्रत्यक्ष स्वास्थ्य प्रभाव दीर्घकालिक और गहराई से समाज को प्रभावित करते हैं। यह संक्रामक रोगों के प्रसार, कुपोषण, श्वसन रोग, मानसिक समस्याओं और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के रूप में दिखाई देते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए स्वास्थ्य ढाँचे को मजबूत करना, स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना और खाद्य-जल सुरक्षा सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

जलवायु परिवर्तन और मानसिक स्वास्थ्य:-

जलवायु परिवर्तन का शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा असर पड़ रहा है। बाढ़, चक्रवात, सूखा, हीट वेव और जंगल की आग जैसी घटनाओं का लोगों के जीवन, आजीविका और सामाजिक संरचना को प्रभावित करती है। इन परिस्थितियों में से उत्पन्न असुरक्षा, भय और तनाव लंबे समय तक मानसिक रोगों का कारण बन सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जलवायु परिवर्तन को मानसिक स्वास्थ्य के लिए उभरता हुआ वैश्विक खतरा माना है।

1. प्राकृतिक आपदाएँ और मानसिक स्वास्थ्य- इन आपदाओं के पीड़ितों में पोस्ट ट्रामेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर, चिंता और अवसाद की दर बहुत अधिक होती है। अपने प्रियजनों की मृत्यु, घर और संपत्ति के नुकसान से मानसिक असंतुलन पैदा होती है। 2004 की सुनामी और 2013 की उत्तराखंड त्रासदी के बाद पीड़ितों में मानसिक रोगियों की संख्या बढ़ी है।
2. हीट वेव और मानसिक असंतुलन- अत्यधिक गर्मी शारीरिक रोग लाती है और मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालती है। अध्ययनों से पता चला है कि हीटवेव के दौरान चिड़चिड़ापन, नींद की कमी, आक्रामक व्यवहार और आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती है। लगातार तापमान बढ़ने से मानसिक तनाव और सामाजिक संघर्षों में भी वृद्धि होती है।
3. सूखा और आजीविका संकट- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाले देशों में सूखा लोगों की आजीविका पर सीधा असर डालता है। किसानों में आर्थिक असुरक्षा, कर्ज का बोझ और फसल नुकसान अवसाद और आत्महत्या के प्रमुख कारण बनते हैं। भारत के कई राज्यों में किसानों की आत्महत्या का एक बड़ा कारण जलवायु असंतुलन से उत्पन्न सूखा रहा है।
4. जलवायु प्रवासी और मानसिक चुनौतियाँ- जलवायु परिवर्तन के कारण लाखों लोग अपने घर छोड़ने को मजबूर होते हैं। ऐसे विस्थापित लोग सामाजिक और सांस्कृतिक असुरक्षा का सामना करते हैं। शरणार्थी शिविरों में रहने वाले तनाव, अवसाद और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ देखी जा सकती हैं।
5. बच्चों और बुजुर्गों पर प्रभाव- बच्चे मानसिक आघात के प्रति संवेदनशील होते हैं। आपदा के बाद उनमें भय, चुप्पी, व्यवहारिक बदलाव और पढ़ाई में रुचि की कमी देखी जाती है। बुजुर्गों में अकेलापन और असहायता की भावना अवसाद को जन्म देती है।

जलवायु परिवर्तन और मानसिक स्वास्थ्य के बीच गहरा संबंध होता है। प्राकृतिक आपदाएँ, आजीविका संकट, विस्थापन और बढ़ता

तापमान मनोवैज्ञानिक असुरक्षा को जन्म दे रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना उतना ही आवश्यक है जितना शारीरिक रोगों के रोकथाम पर। क्योंकि स्वस्थ मानसिक स्थिति ही समाज और व्यक्तियों को जलवायु संकट से उबरने की शक्ति प्रदान कर सकती है।

जलवायु परिवर्तन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव और स्वास्थ्य :-

जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय संकट ही नहीं है यह एक सामाजिक और आर्थिक संकट भी है। जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। जब तापमान, वर्षा, जल उपलब्धता और प्राकृतिक संसाधनों में असंतुलन आता है तो उसका प्रभाव समाज की जीवनशैली, आजीविका और आर्थिक स्थिरता पर पड़ता है। इसके परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और भी गंभीर हो जाती हैं।

1. आजीविका और रोजगार पर प्रभाव - कृषि और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्र जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। अनियमित वर्षा और सूखे से फसल उत्पादन घटता है, जिससे किसानों की आय कम होती है। बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा मानसिक तनाव, अवसाद और आत्महत्या जैसी समस्याओं को बढ़ावा देती है। श्रमिक वर्ग जो निर्माण और बाहर काम करने वाले मजदूर, हीट वेव और प्रदूषण से अधिक प्रभावित होते हैं।
2. खाद्य सुरक्षा और कुपोषण - जलवायु परिवर्तन से कृषि उत्पादन अस्थिर हो जाता है, जिससे खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ती हैं। गरीब वर्ग पौष्टिक भोजन तक नहीं पहुँच पाता है और बच्चों में कुपोषण, एनीमिया और वृद्धि अवरोध जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। भारत जैसे देशों में यह स्थिति सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली पर भारी बोझ डालती है।
3. जल संकट और सामाजिक असमानता - जलवायु परिवर्तन के कारण कई क्षेत्रों में जल संकट गहराता जा रहा है। स्वच्छ जल की कमी से जलजनित रोग फैलते हैं और गरीब समुदाय सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदाय गंभीर स्वास्थ्य संकट का सामना करते हैं।
4. विस्थापन और जलवायु-प्रवासी - बाढ़, समुद्र-स्तर वृद्धि और सूखे के कारण लोग अपने घर छोड़ने को मजबूर हो जाते हैं। ऐसे जलवायु प्रवासी (Climate Refugees) स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हो जाते हैं। विस्थापन से तनाव, अवसाद और संक्रमण जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं।
5. स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव - प्राकृतिक आपदाओं और रोगों के प्रसार से स्वास्थ्य प्रणाली पर अचानक बोझ बढ़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पहले से ही सीमित संसाधनों वाली स्वास्थ्य सेवाएँ ढहने की स्थिति में पहुँच जाती हैं। आपदा प्रभावित क्षेत्रों में अस्पतालों और दवाओं की कमी से मृत्यु दर बढ़ जाती है।
6. सामाजिक असमानताएँ - जलवायु परिवर्तन का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर समान रूप से नहीं पड़ता है। गरीब, महिलाएँ, बच्चे, बुजुर्ग अधिक संवेदनशील होते हैं। अमीर समुदाय आधुनिक सुविधाओं से खुद को बचा लेते हैं, लेकिन गरीब वर्ग सीधे संकट का सामना करता है। यह असमानता सामाजिक तनाव और संघर्ष को भी जन्म देती है।

जलवायु परिवर्तन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मानव स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करता है। खाद्य और जल असुरक्षा, बेरोजगारी, विस्थापन और स्वास्थ्य सेवाओं पर बढ़ते बोझ के कारण स्वास्थ्य

संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इस संकट से निपटने के लिए सामाजिक न्याय आधाति नीतियों, सतत कृषि, रोजगार सुरक्षा और सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

नीतिगत पहल और समाधान :-

जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य पर बढ़ते खतरे का प्रमुख कारण बन गया है। इससे उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याएँ जैसे हीट स्ट्रोक, संक्रामक रोग, कुपोषण, मानसिक स्वास्थ्य विकार और जलजनित रोगों का सामना करने के लिए नीतिगत पहल और रणनीतियाँ अत्यंत आवश्यक हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की नीतियाँ इस संकट का समाधान खोजने का मार्ग प्रदान करती हैं। देशों को अपनी स्वास्थ्य नीतियों में जलवायु अनुकूलन रणनीतियों को शामिल करनी चाहिए। आपदा प्रबंधन और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ स्थापित होने चाहिए। संवेदनशील क्षेत्रों में स्वास्थ्य विभाग को विशेष प्रशिक्षण देना आवश्यक है। नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देकर और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सकता है। वाहनों, उद्योगों और कृषि क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण कानून और उत्सर्जन मानक लागू करना आवश्यक है। स्वास्थ्य और पोषण के लिए जलवायु सुरक्षित कृषि को अपनाने पर बल देना चाहिए। सूखा और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में जल संचयन और सिंचाई तकनीक को बढ़ावा देना चाहिए। पर्याप्त पोषण और स्वच्छ जल सुनिश्चित करने के लिए सरकारी योजनाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। प्राकृतिक आपदाओं और विस्थापन से प्रभावित लोगों के लिए मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ लागू करना चाहिए। सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम लोगों को जलवायु जोखिम और स्वास्थ्य सुरक्षा के उपायों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। मोबाइल हेल्थ क्लिनिक एवं आपातकालीन स्वास्थ्य दलों का गठन किया जाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुसंधान और नवीन तकनीकों को बढ़ावा देना आवश्यक है। नीति निर्माताओं, स्वास्थ्य विशेषज्ञों और समाज को मिलकर एक सतत और समग्र रणनीति अपनानी होगी।

निष्कर्ष :-

जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय की सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों में से एक है। जिसका प्रभाव केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है यह मानव स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से गहरा असर डालता है। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ की कुल जनसंख्या का बड़ा हिस्सा कृषि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है वहीं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव और भी गंभीर रूप लेता जा रहा है। बढ़ती गर्मी, असमान मानसून, बाढ़ और सूखा, संक्रामक रोगों का प्रसार और पोषण संकट को बढ़ाते हैं। इसके अलावा मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है क्योंकि आपदाओं और विस्थापन से तनाव, अवसाद और PTST जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के बीच के इस गहरे संबंध को देखते हुए आवश्यक है कि स्वास्थ्य नीतियों में जलवायु अनुकूलन रणनीतियाँ अपनाई जाएँ। स्वच्छ ऊर्जा, जल और खाद्य सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ और अंतरराष्ट्रीय सहयोग इसे नियंत्रित करने के महत्वपूर्ण उपाय हैं। जलवायु परिवर्तन को केवल पर्यावरणीय चुनौती न मानकर स्वास्थ्य आपातकाल के रूप में समझना आवश्यक है। समय रहते ठोस कदम उठाकर, नीति निर्माण, जागरूकता, अनुसंधान और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से हम मानव स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकते हैं। यह वर्तमान पीढ़ी व भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी जीवन और स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।

संदर्भ सूची

1. लाल, एस.डी. (1995) जलवायु विज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
2. गौतम, अलका (2010) जलवायु एवं समुद्र विज्ञान, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ।
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) Climate Change and Health. Geneva
4. भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना, नई दिल्ली।
5. डाउन टू अर्थ (हिन्दी पत्रिका) जलवायु परिवर्तन और जनस्वास्थ्य, विशेषांक।
6. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट (NIDM) Climate Change, Disasters and Health in India. New Delhi.
7. भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) Climate Change and Human Health in India. New Delhi.
8. यूनीसेफ (UNICEF) Children's Health and Climate Change. New York.
9. <https://www.epa.gov/climateimpacts/climate-change-impacts-health>
10. <https://www.mphonline.org/climate-change-and-public-health/>
11. https://en.wikipedia.org/wiki/Effects_of_climate_change_on_human_health
12. <https://www.who.int/teams/environment-climate-change-and-health/climate-change-and-health/capacity-building/toolkit-on-climate-change-and-health/impacts>